(6)

TUBERCULOSIS
&
ITS PREVENTION

क्षयरोग
तथा
क्षयरोग की रोकथाम

01617
1617

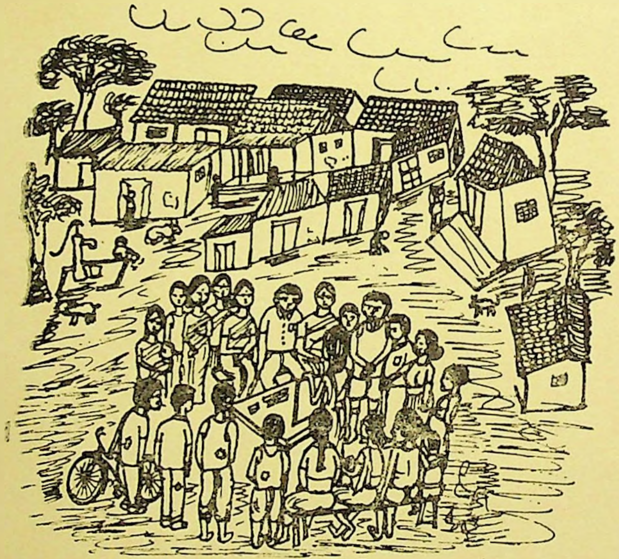

क्षयरोग

क्षयरोग से बचा जा सकता है और इसका इलाज भी किया जा सकता है। फिर भी भारत के, विशेषकर गरीब तथा कुपोषण के शिकार लोगों में क्षयरोग उन बड़ी बीमारियों में से एक है जो मत्यु क़ा कारण बनती है।

क्षयरोग स्वास्थ्य की एक ऐसी समस्या है जिसमें हर भारतीय लिपटा हुआ है। यह एक संप्रेषित रोग होने के कारण कोई भी व्यक्ति इससे तब तक छुटकारा नहीं पा सकता जब तक कि सभी लोग इससे छुटकारा न पा लें।

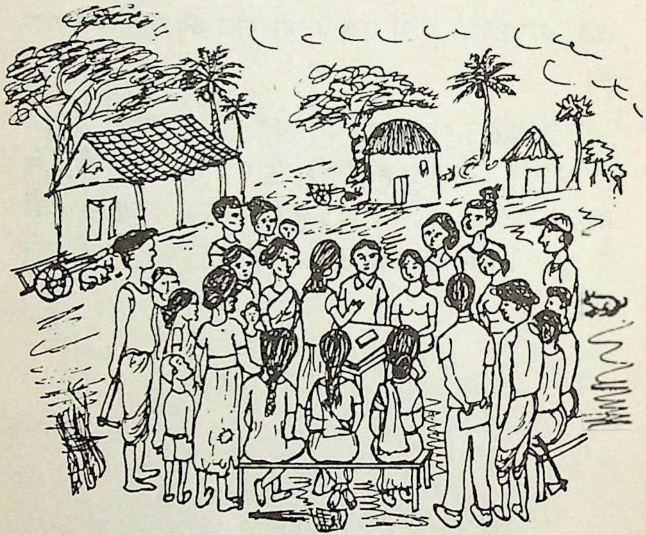

01617

COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

सामुदायिक भागीदारी द्वारा क्षयरोग की रोकथाम

यदि हमारे देश में क्षयरोग की सफलता-पूर्वक रोकथाम करना है तो इस रोग के बारे में जानकारी या ज्ञान भी जरुरी है।

जब समुदाय के पूरे लोग क्षयरोग की रोकथाम के कार्य में पूर्ण सहयोग देगें तभी हम इस रोग को रोक सकते हैं।

क्षयरोग का फैलना

क्षयरोग अनुवांशिक नहीं है। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

क्षयरोग की संक्रमण की अवस्था का रोगी खांसी के साथ–साथ रोग के असंख्य विषाणु फेंकता है और आसपास के लोग इनको सांस द्वारा भीतर खींचते हैं। इस प्रकार रोग के विषाणु शरीर में प्रवेश करते हैं।

क्षयरोग को फैलने से कैसे रोकें

1. क्षयरोग को फैलने से रोकने के लिए रोगी व्यक्ति का इलाज शीघ्र ही शुरू कर देना चाहिए तथा उसको एक वर्ष तक दवा देते रहना चाहिए या कम से कम छः महीने तक तो अवश्य देना चाहिए।

इलाज़ शुरू होने के कुछ ही दिनों में रोगी का खंसना और थूकना कम होगा। उसके थूक में क्षयरोग के विषाणु भी कम रहेंगे।

2. क्षयरोग के रोगी को खांसते समय अपना मुंह ढंककर रखना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति खांसी को रोक नहीं पाता या अपना मुंह ढंकना नहीं चाहता, उसे एक मुखौटा पहनना चाहिए। इससे संक्रमित रोगी के आसपास के व्यक्तियों में रोग फैलने को रोका जा सकता है।

3. खांसी के साथ थूके गये बलगम को सोख्ता-कागज 'लाइसोल' (Lysol) से भरे डिब्बे में रखना चाहिए। उस कागज को या तो जला देना चाहिए या नाली में बहा देना चाहिए क्योंकि उसमें रोग के विषाणु होते हैं। डिब्बे में जमा किया गया बलगम शौचालय में बहाकर खाली डिब्बों को जमीन में गाड़ देना चाहिए।

01617
COMM 321

COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

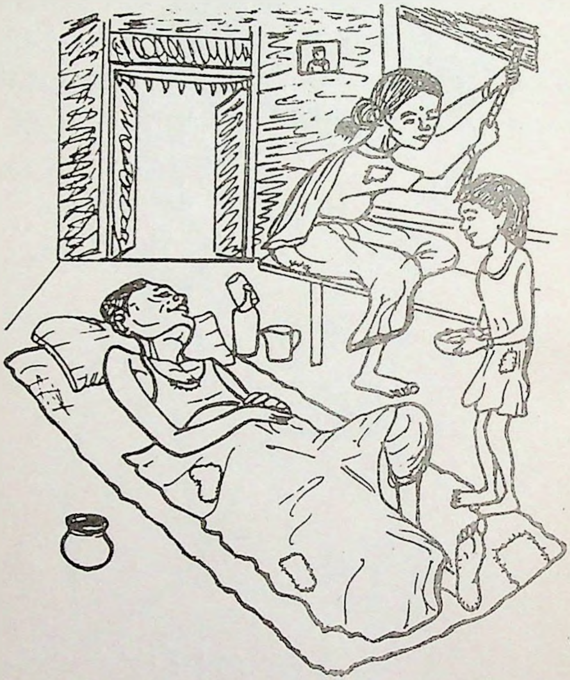

4. क्षयरोग के बीमार व्यक्ति का कमरा अच्छा हवादार होना चाहिए। जब हवा अच्छी तरह आती-जाती रहेगी तब कमरे में विषाणु भी कम रहेंगे।

बी.सी.जी. द्वारा क्षयरोग का बचाव

क्षयरोग से बचाव करना वास्तविक रोग के इलाज से अधिक प्रभावी, सस्ता और कम परेशानी वाला होता है।

बी.सी.जी. नामक सस्ती, प्रभावशाली व सुरक्षित दवा द्वारा रोग से बचा जा सकता है। छोटी उम्र से ही इसका संक्रमण होता है; इसलिए बच्चों को जितना जल्दी हो सके, उतनी जल्दी बी.सी.जी. की दवा देना लाभदायक रहता है।

आजकल क्षयरोग की रोकथाम के लिए बी.सी.जी. के बारे में भिन्न-भिन्न राय है। फिलहाल, कुष्ठरोग को रोकने में इसका विशेष योगदान है। इसीलिए बी.सी.जी. देने की राय दी जाती है।

बी.सी.जी. के टीके

बी.सी.जी. की दवा इन्जेक्शन से दी जाती है। लगभग आठ सप्ताह बाद एक छोटी-सी फुंसी टीके के स्थान पर होती है जो शीतला के टीके से भी बहुत छोटी होती है।

जिस जगह पर टीका दिया गया हो उसे एक-दो घंटे तक धूप में खुला नहीं रखना चाहिए लेकिन उसे ढंककर भी नहीं रखना चाहिए।

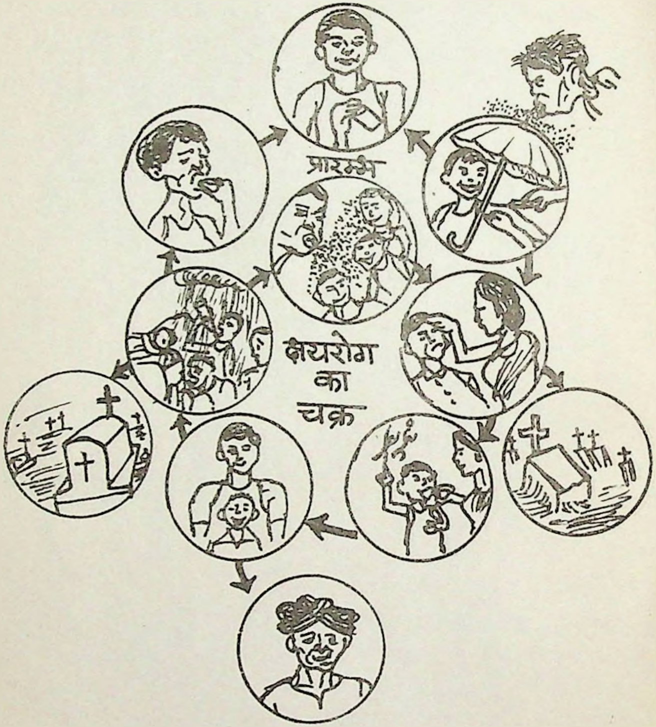

क्षयरोग का चक्र

जो व्यक्ति क्षयरोग के रोगी के साथ निकट, लगातार और बहुत दिनों तक संपर्क रखते हैं उन्हें यह रोग हो जाता है।

बच्चों में क्षयरोग सामान्य रूप से हो जाता है जो अपनी प्राथमिक अवस्था में बिना किसी लक्षण या निशान के शान्त रूप में रहता है।

इस रोग की दूसरी अवस्था भी सामान्यत: बच्चों में पायी जाती है। छोटे बच्चों में यह रोग बहुत ही गंभीर तथा घातक प्रभाव डालता है जिससे मृत्यु भी हो सकती है। यदि प्रारंभ में ही इलाज किया जाए तो बच्चा सामान्य रूप से बढ़ सकता है और स्वस्थ्य रह सकता है।

तीसरी अवस्था बड़े व्यक्तियों में तब अधिक पाई जाती है जब वे घोर गरीबी की वजह से बहुत कमजोर हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों के फेफड़ों में क्षयरोग के विषाणु जो अब तक निष्क्रिय पड़े थे, वे सक्रिय हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने आस-पास के व्यक्तियों में रोग फैलाने के स्रोत होते हैं। इलाज करने से ये ठीक होते हैं और बिना इलाज के ये मर जाते हैं।

क्षयरोग के लक्षण

क्रमानुसार रोग के लक्षण निम्न हैं :

गीली खांसी (बलगम के साथ)
समय-समय पर बुखार आना
शारीरिक भार में कमी
थकान
खूनमिला थूक आना।

COMH 321
01617

COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koremangala
Bangalore-560034
India

क्षयरोग की रोकथाम

क्षयरोग की रोकथाम के लिए तीन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

सभी बच्चों को बी.सी.जी. के टीके लगाकर इसके संक्रमण को रोकना।

क्षयरोग से पीड़ित लोगों को पहचान कर उनका इलाज करना। जिस व्यक्ति को दो सप्ताह से अधिक दिन तक खांसी हो तो उसके थूक की परीक्षा करवानी चाहिए।

मोहल्ले में स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा देना जिससे सभी को क्षयरोग की जानकारी और उससे बचने के उपाय मालूम हो सकें।

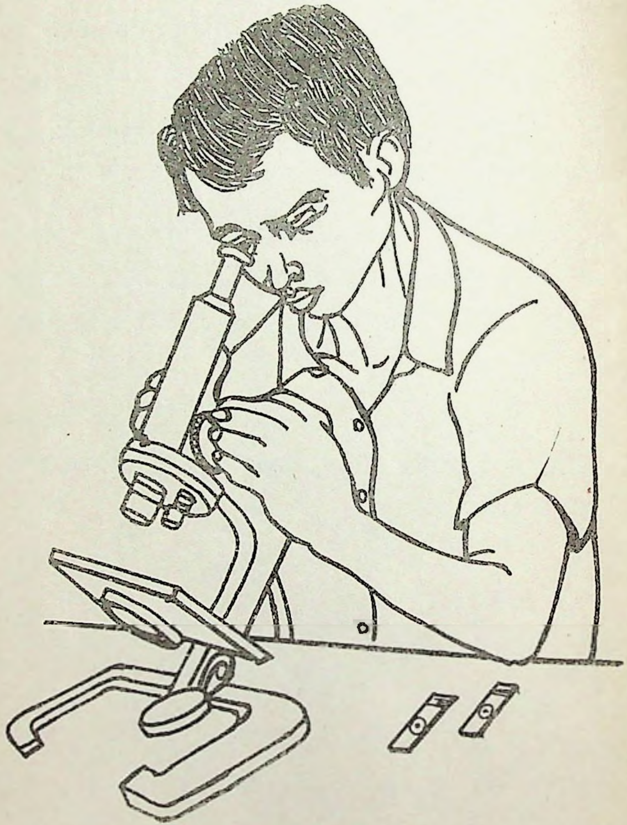

क्षयरोग का निदान

क्षयरोग के विषाणुओं को पहचानने का सबसे सरल, सस्ता, शीघ्र और सीधा तरीका सूक्ष्मदर्शी यंत्र से रोगी के थूक की जांच करना है। मोहल्ले के स्वास्थ्य - कार्यकर्ता इस विधि को आराम से सीख सकते हैं।

थूक-परीक्षा से इलाज की स्थिति का पता करना

रोगी के इलाज़ की स्थितियों का मूल्यांकन करने में भी थूक-परीक्षण का विशेष सहयोग मिलता है। इलाज शुरु करने के कई सप्ताह बाद रोग के विषाणु (ट्यूबरकल्-बैसिली) खत्म हो जाते हैं।

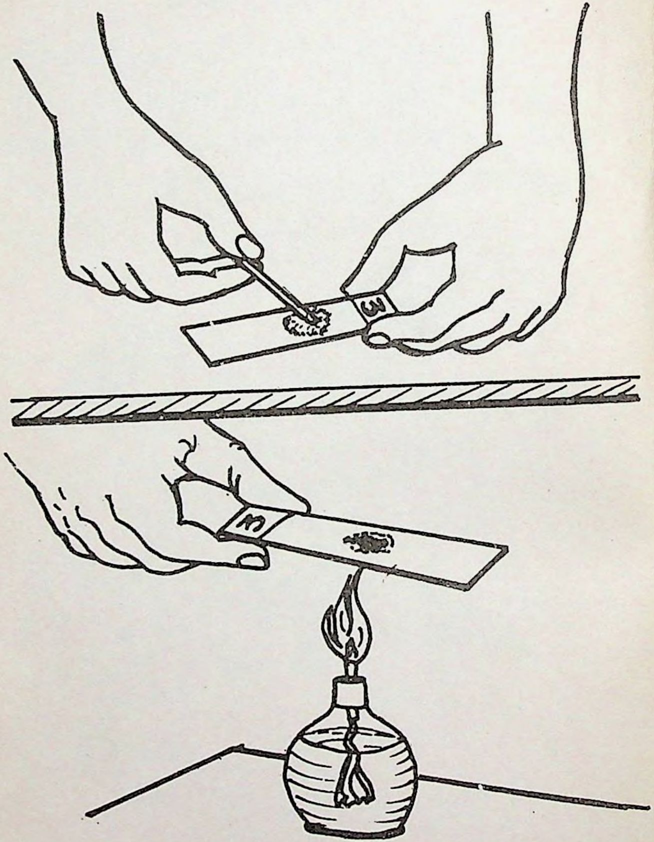

थूक-परीक्षण की विधि

1. पहले एक कांच की स्लाइड पर रोगी का थोड़ा-सा थूक लेकर उसे स्पिरिट-लैम्प की लौ में सुखा लें।

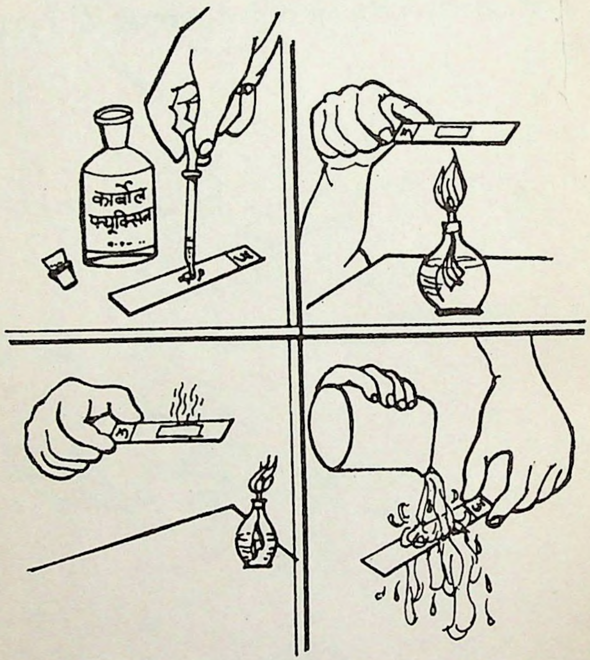

2. सूखे थूक पर कार्बोल फ्यूकसिन की कुछ बूंदें डालें।

स्पिरिट लैम्प की लौ पर उस स्लाइड को फिर सखाएं। 3 से 5 मिनट तक उसे ठंडा होने के लिए रख दें।

स्लाइड को पानी से धो दें।

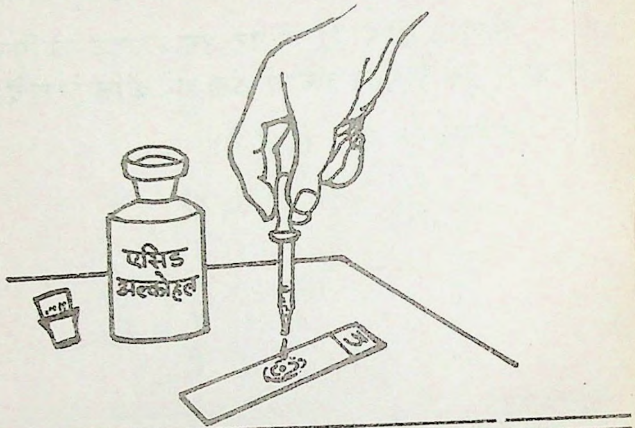

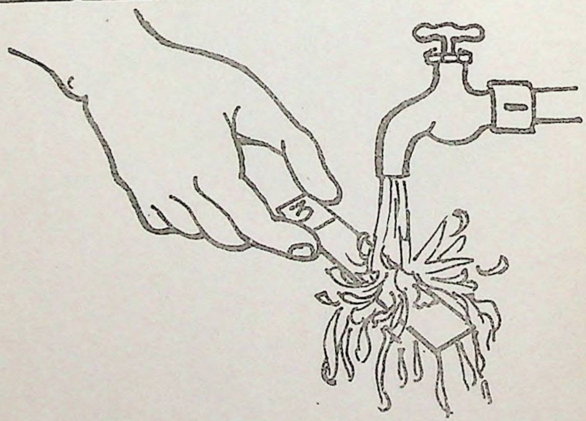

3. तेजाब मिले अल्कोहल की कुछ बूंदें स्लाइड पर डालें।

फिर से स्लाइड को पानी से धोएं।

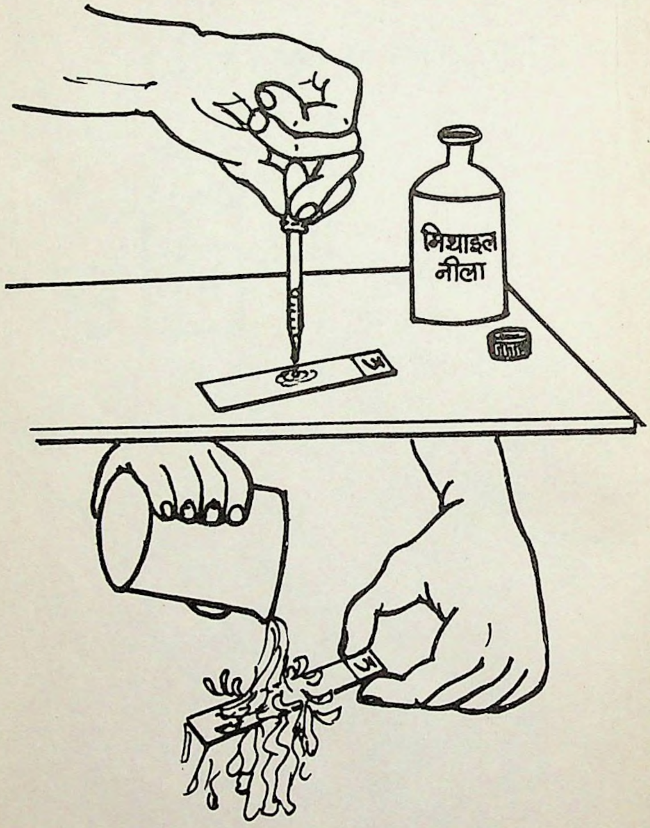

4. स्लाइड पर नीले मिथाइल की कुछ बूंदें डालकर 30 सेकेण्ड तक रखें।

स्लाइड को पानी से दुबारा धोएं।

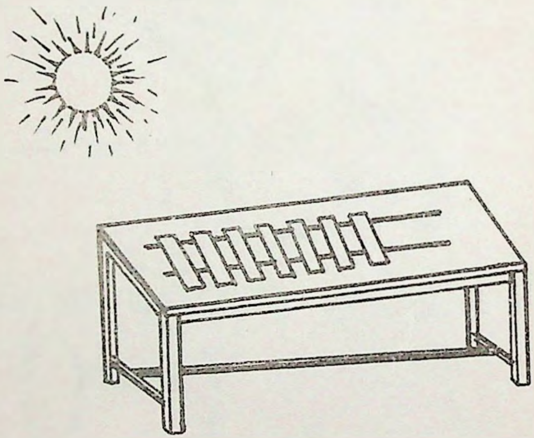

5. तैयार की गई स्लाइड़ों को धूप में सुखाएं।

इसके बाद स्लाइड परीक्षण के लिए तैयार हो जाएगी।

रोगयुक्त स्लाइड वह होगी जिसमें लाल रंग के दण्डाकार ट्यूबरकल् बैसिली के विषाणु दिखाई देंगे।

जितनी अधिक मात्रा में विषाणु दिखाई देंगे, रोग उतना ही संक्रमक होगा।

स्वास्थ्य-शिक्षा की प्रमुखता

सुझायी गई दवाओं से अधिक प्रभावी इलाज का योगदान होता है। इसमें निम्न बातें आती हैं :

रोग के बारे में व्यक्तिगत निर्देशन और निर्धारित समय तक इलाज की आवश्यकता।

रोगी को इस बात के लिए व्यक्तिगत सहायता व प्रोत्साहन दें कि उसका इलाज रुक नहीं गया है।

हर तीसरे-चौथे महीने में थूक-परीक्षण द्वारा इलाज का मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

स्वास्थ्य - कार्यकर्ताओं का योगदान

क्षयरोग के मरीज को किसी भी बात से डरना नहीं चाहिए।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा रोगी को इस बात के लिए तैयार करना चाहिए की उसे जितने दिन तक इलाज करने के लिए कहा गया है, उतना इलाज अवश्य करे।

परिवार व मित्रों द्वारा रोगी को इस बात के लिए प्रोत्साहन देते रहना चाहिए कि वह रोग से मुक्त हो जाएगा। इलाज की सफलता के लिए ऐसा करना जरूरी है। रोगी और रोग के बीच में सहज संबंध बनाए रखने की जिम्मेदारी परिवार और मोहल्ले वालों की होती है।

प्रश्न

1. क्षयरोग की पहचान आप कैसे करेंगें? क्या क्षयरोग अनुवांशिक हो सकता है?
2. क्षयरोग के निदान की सबसे ज्यादा भरोसेमन्द विधि कौन-सी है?
3. क्या क्षयरोग अमीरों में सामान्य रूप स पाया जाता है? क्यों?
4. क्षयरोग के इलाज के लिए कौन-सी दवाओं का प्रयोग किया जाता है?
5. आप क्षयरोग की रोकथाम कैसे करेंगे?
6. बी.सी.जी. क्या है? यह किसे दी जाती है?

क्षयरोग की रोकथाम की जा सकती है। क्षयरोग का इलाज किया जा सकता है।

इस शृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003